



डीआरडीओ

डी आर डी ओ की मासिक गृह पत्रिका

समाचार

डी आर डी ओ द्वारा विकसित विस्फोटक संसूचन किट का अमेरिका में लोकार्पण



विस्फोटक संसूचन किट का लोकार्पण ।

डी आर डी ओ की पुणे स्थित उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल) द्वारा विकसित विस्फोटक संसूचन किट (ई डी के) का 02 अगस्त, 2012 को अमेरिका में लोकार्पण किया गया। अमेरिका की साउथ कैरालिना स्थित क्रोवे एंड कंपनी इस विस्फोटक संसूचन किट (ई डी के) का विनिर्माण करेगी तथा उसे बाजार में लाएगी।

विस्फोटक संसूचन

किट (ई डी के) का प्रौद्योगिकी अंतरण डी आर डी ओ द्वारा स्वेदश में विकसित की गई प्रौद्योगिकी के घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में वाणिज्यीकरण हेतु त्वरित प्रौद्योगिकी मूल्यांकन तथा वाणिज्यीकरण (ए टी ए सी) कार्यक्रम के अंतर्गत डी आर डी ओ तथा भारतीय वाणिज्य तथा उद्योग मंडल परिसंघ (फिक्की) का एक संयुक्त प्रयास है। त्वरित प्रौद्योगिकी मूल्यांकन तथा वाणिज्यीकरण (ए टी ए सी) कार्यक्रम के अंतर्गत स्वेदश में विकसित की गई प्रौद्योगिकी के वाणिज्यीकरण हेतु अनेक प्रौद्योगिकियां भारतीय कंपनियों को अंतरित की गई हैं। तथापि, विस्फोटक संसूचन किट (ई डी के) का लोकार्पण एक उल्लेखनीय घटना है क्योंकि इसके विनिर्माण तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में आपूर्ति के लिए अमेरिकी कंपनी को अंतरित की गई यह पहली प्रौद्योगिकी है। डी आर डी

४०

इस अंक में

४२

- पृथ्वी-2 का सफल प्रयोक्ता परीक्षण
- ए आर डी ई में जलवायु परीक्षण केंद्र का उद्घाटन
- रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा प्रोफेसर कोठारी स्मृति व्याख्यान
- वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी) द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन
- बिहार द्वारा 20वें लद्दाखी किसान-जवान-विज्ञान मेले का आयोजन
- मानव संसाधन विकास गतिविधियां
- राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस
- एन एस टी एल द्वारा 44वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन
- डी आर डी ओ प्रयोगशालाओं / स्थापनाओं में पधारें अतिथिगण



डी आर डी ओ तथा सेंटर फॉर इन्नोवेशन, आर्लिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच अभिरुचि की अभिव्यक्ति का आदान-प्रदान।

ओ-फिक्की ने इसके लिए क्रोवे एंड कंपनी के साथ एक लाइसेंसिंग करार किया है।

विस्फोटक संसूचन किट (ई डी के) एक अद्वितीय तथा नूतन उत्पाद है जो फील्ड में सभी प्रकार के विस्फोटकों का अत्यधिक परिशुद्धतापूर्वक संसूचन करता है। विस्फोटक पदार्थ नाइट्रो-एस्टर, नाइट्रैमीन, ट्राइनाइट्रोटॉलूईन, डायनामाइट या ब्लैक पाउडर (काला बारुद) के किसी भी संयोजन से निर्मित हो सकता है। इस किट में 'वर्ण रसायन (कलर केमिकल)' के सिद्धांत



विस्फोटक संसूचन किट का लोकार्पण।

के आधार पर ऐसे अभिकर्मकों का प्रयोग किया जाता है जो परिणामी रंग द्वारा विस्फोटक के किस्म को संसूचित करने के लिए रासायनिक अभिक्रियाओं को आरंभ करता है। संदिग्ध विस्फोटक पदार्थ पर कणित अभिकर्मकों की कुछ बूंदें या ब्लास्ट (झोंका) डालने पर टी एन टी, पी ई टी एन या आर डी एक्स जैसे विस्फोटकों की उपस्थिति की परिशुद्धतः पुष्टि हो जाती है या फिर खंडन हो जाता है। यह किट विभिन्न रूपों तथा आकार में उपलब्ध है तथा इसे भारत में विधि प्रवर्तक एजेंसियों द्वारा व्यापक रूप में प्रयोग में लाया जा रहा है। क्रोवे एंड कंपनी की योजना इस विस्फोटक

संसूचन किट (ई डी के) को अमेरिकी सेना तथा अमेरिका में आंतरिक सुरक्षा बलों द्वारा प्रयोग में लाए जाने एवं अन्य वैश्विक बाजारों में प्रयोग में लाए जाने के लिए प्रस्तुत करने की है। इस विस्फोटक संसूचन किट (ई डी के) के प्रौद्योगिकी अंतरण से यह प्रदर्शित हुआ है कि भारत तथा अमेरिका के बीच प्रौद्योगिकी अंतरण एक दोतरफा प्रक्रिया भी हो सकता है तथा यह इन दोनों देशों के बीच अनेक अन्य उद्यमिता कार्यों की शुरुआत है जिससे अन्य क्षेत्रों में भी संबंधों को मजबूती प्राप्त होगी।

प्रौद्योगिकी अंतरण हेतु आयोजित किए गए समारोह में साउथ कैरोलिना के गवर्नर निक्की हैरी; रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव एवं डी आर डी ओ के महानिदेशक, श्री अविनाश चंद्र; अमेरिका में भारतीय राजदूत सुश्री निरुपमा राव; विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पर अमेरिकी राष्ट्रपति के वरिष्ठ सलाहकार, डॉ जॉन होल्ड्रेन; यू एस आई बी सी के अध्यक्ष, रॉन सोमर्स; फिक्की के महासचिव डॉ ए दीदार सिंह; क्रोवे एंड कंपनी की सी ई ओ सुश्री फाये क्रोवे; डी आर डी ओ के श्री एस सुंदरेश, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (ए सी ई एंड एस आई); डी आर डी ओ में इंडस्ट्री इंटरफेस एंड टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट (आई आई टी एम) के निदेशक श्री एस राधाकृष्णन; श्री के वी आर मूर्ति, आई एफ ए, आर एंड डी; डॉ एस एन अस्थाना तथा डॉ रेन्नी एम राय ने भाग लिया।

पृथ्वी-2 का सफल प्रयोक्ता परीक्षण

सामरिक बल कमान (एस एफ सी) ने स्वदेश-विकसित लगभग 350 किलोमीटर के प्रहार क्षेत्र में सतह-से-सतह पर मार करने वाली/नाभिकीय क्षमता से युक्त मिसाइल पृथ्वी-2 का 12 अगस्त 2013 को ओडीशा के अपतट पर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज (आई टी आर), बालासोर से सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। यह एक पूर्णतः आदर्श प्रक्षेपण था तथा अत्यधिक परिशुद्ध स्वदेश-विकसित नौसंचालन तथा युद्धाभ्यास प्रणालियों से सुसज्जित इस मिसाइल ने प्रक्षेपण हेतु निर्धारित किए गए अपने सभी लक्ष्य तथा तकनीकी मापदंडों को प्राप्त किया। इस मिसाइल को प्रक्षेपण पथ का डी आर डी ओ रेडारों, वैद्युत प्रकाशीय अनुवर्तन प्रणालियों तथा ओडीशा के अपतट पर स्थित दूरीमिति केंद्रों द्वारा अनुवर्तन किया गया। बंगाल की खाड़ी में निर्धारित लक्ष्य स्थल के निकट तैनात किए गए पोत पर सवार डाउन रेंज टीमों ने मिसाइल द्वारा लक्ष्य पर प्रहार करने एवं उससे टकराने की घटना पर निगरानी रखी।

वर्ष 2003 में भारत के सामरिक बल कमान (एस एफ सी) में शामिल की गई पृथ्वी-2 मिसाइल भारत के प्रतिष्ठित एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आई जी एम डी पी) के अंतर्गत डी आर डी ओ द्वारा विकसित की गई पहली मिसाइल है जो अब एक सिद्ध प्रौद्योगिकी का रूप ले चुकी है। यह प्रक्षेपण सामरिक बल कमान



(एस एफ सी) के नियमित प्रशिक्षण अभ्यास का एक हिस्सा था और यह डी आर डी ओ के वैज्ञानिकों की निगरानी में किया गया। श्री अदालत अली, कार्यक्रम निदेशक, ए डी तथा श्री एन शिवा सुब्रह्मण्यम, परियोजना निदेशक ने प्रक्षेपण संबंधी क्रियाकलापों पर समग्रतः निगरानी रखी। इस प्रक्षेपण के दौरान श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद; श्री एम वी के वी प्रसाद, निदेशक, आई टी आर तथा श्री आर अप्पाउराज, निदेशक, प्रमाण तथा प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर भी इस प्रक्षेपण के दौरान उपस्थित थे। एक सचल ट्रांसपोर्टर इरेक्टर प्रक्षेपण यान पर स्थित इस मिसाइल की दिशा इच्छानुसार बदली जा सकती है तथा इसे युद्ध के मैदान में तेजी से संचालित किए जाने तथा उच्च प्रचालनात्मक लोच उपलब्ध कराते हुए निर्मित किया गया है। सामरिक बल कमान (एस एफ सी) के एक प्रवक्ता ने कहा कि इस प्रकार के सफल प्रशिक्षण प्रक्षेपण से किसी भी प्रकार की आकस्मिक स्थिति का सामना करने में हमारी प्रचालनात्मक तैयारी स्पष्टतः सूचित होती है तथा भारत के सामरिक शस्त्रास्त्र-समूह के इस रोधी संघटक की विश्वसनीयता भी स्थापित होती है।

माननीय रक्षा मंत्री श्री ए के एंटनी ने इस सफल परीक्षण प्रक्षेपण के लिए पृथ्वी-2 की संपूर्ण टीम को बधाई दी।

आर डी ई में जलवायु परीक्षण केंद्र का उद्घाटन

श्री अनिल एम दातार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे द्वारा 05 जुलाई 2013 को एक नए जलवायु परीक्षण केंद्र (सी टी सी) का उद्घाटन किया गया। यह जलवायु परीक्षण केंद्र (सी टी सी) भंडार सामग्रियों के उपयोगी आयु मूल्यांकन, ऊंचाई, वायु के संपर्क में रखने के कारण पड़ने वाले प्रभाव, दैनिक, लवण धूमिका, तप्त तथा शीत अनुकूलन (-70° से 150° सेल्सियस) से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराता है।

जलवायु परीक्षण केंद्र (सी टी सी) आयुध प्रणालियों के पर्यावरणीय परीक्षण हेतु डी आर डी ओ

में स्थापित की गई एक अद्वितीय परीक्षण सुविधा है। यह सुविधा चौबीसों घंटे काम करती है।



जलवायु परीक्षण केंद्र का उद्घाटन करते हुए श्री अनिल एम दातार।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार द्वारा प्रोफेसर कोठारी स्मृति व्याख्यान



प्रोफेसर कोठारी स्मृति व्याख्यान के उद्घाटन का दृश्य (बायें), श्री अविनाश चंद्र, व्याख्यान देते हुए (दायें)।

रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक, श्री अविनाश चंद्र ने 08 जुलाई 2013 को रक्षा प्रयोगशाला, जोधपुर में 'भविष्य में मानवरहित युद्ध : प्रौद्योगिकीय चुनौतियां' विषय पर 21वां प्रोफेसर दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस समारोह की अध्यक्षता माननीय केंद्रीय संस्कृति मंत्री, सुश्री चंद्रेश कुमारी ने की। डॉ जी मालकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं मुख्य नियंत्रक अनुसंधान तथा विकास (एच आर एंड एम) सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर जोधपुर स्थित शिक्षा जगत, अनुसंधान तथा सामाजिक संस्थाओं के अनेक सम्मानित विशिष्ट जन भी उपस्थित थे।

अपने व्याख्यान में श्री अविनाश चंद्र ने मानवरहित रक्षा प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में डी आर डी ओ के विभिन्न कार्यक्रमों तथा अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के संबंध में संक्षेप में चर्चा की। आपने विशेषकर युद्ध क्षेत्र के परंपरागत थल, जल और वायु सीमाओं से विस्तृत होकर अंतरिक्ष तथा साइबर क्षेत्र में पहुंच जाने के कारण वर्तमान तथा भावी रक्षा संदर्भों हेतु मानवरहित प्रौद्योगिकी की आवश्यकता

पर बल दिया। आपने मानवरहित युद्ध प्रणालियों के विकास में सेंसरों, रोबोटिकी, संचार, उन्नत पदार्थ तथा इलेक्ट्रॉनिकी जैसे विभिन्न अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में हुई प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा, "भविष्य में स्वचालित सेंसरों, सूक्ष्म मानवरहित वायु यानों (यू ए वी), रोबोट संतरी, स्वचालित अंतःजलीय यानों आदि को विकसित किए जाने की संभावना है। भावी युद्ध परिदृश्य के लिए मानव बुद्धि से युक्त विभिन्न कार्यों को करने में सक्षम मशीनी मानवों तथा विभिन्न प्रणालियों के बीच पूर्ण समन्वय स्थापित करने की योग्यता की आवश्यकता है।" रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने कहा कि इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक समुदाय, शिक्षा जगत तथा उद्योग के बीच उच्च स्तर के सहयोग को स्थापित करने की आवश्यकता है।

श्री अविनाश चंद्र ने रक्षा प्रयोगशाला (डी एल), जोधपुर में फेराइट सिंथेसिस पाउडर कोटिंग प्रयोगशाला (एफ एस पी सी एल) भवन का भी उद्घाटन किया। यह सुविधा रेडार ऐब्जॉर्बिंग कोटिंग तथा सिरैमिक टाइलों को थोक में तैयार करने के लिए भारत तथा बेलारूस के बीच स्थापित एक संयुक्त उद्यम है।

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी) द्वारा स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन

वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एस ए जी), दिल्ली इस वर्ष अपना स्वर्ण जयंती समारोह मना रहा है। अपने 50 वर्षों की यात्रा के दौरान एस ए जी तीनों सशस्त्र सेनाओं तथा अर्ध-सैनिक संगठनों को मूल्यवान सहायता प्रदान करने वाले एक संगठन के रूप में विकसित हुआ है।

स्वर्ण जयंती समारोहों की शुरुआत 05 अगस्त 2013 को भगवंतम सभागार में आयोजित मनोविनोद से भरपूर 'हास्य कवि संगोष्ठी' के साथ हुई। डॉ पी के सक्सेना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एस ए जी ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ ए के



हास्य कवि संगोष्ठी के अवसर पर उपस्थित कविवर।

मैनी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, लेजर-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक) तथा श्री एस के जिंदल, निदेशक, रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डिसीडॉक) भी उपस्थित हुए। स्वर्ण जयंती समारोह समिति की अध्यक्ष सुश्री अनु खोसला, वैज्ञानिक 'जी' ने अतिथियों का स्वागत किया।

प्रसिद्ध कवियों सर्व श्री महेंद्र अजनबी, वेद प्रकाश वेद तथा युसुफ भारद्वाज ने अपनी मनोविनोद से ओत-प्रोत कविताओं का पाठ करके खचाखच भरे सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभागार में एक स्थायी

वैज्ञानिक 'एफ' ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।



डिहार द्वारा 20वें लद्दाखी किसान-जवान-विज्ञान मेले का आयोजन

विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर अवस्थित कृषि-पशु प्रयोगशाला, डिहार ने लेह स्थित अपने मुख्यालय में 10 अगस्त 2013 को 20वें लद्दाखी किसान-जवान-विज्ञान मेले का आयोजन किया। मुख्यालय 14 कोर के जनरल अफसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल राकेश शर्मा, ए वी एस एम, वी एस एम ने इस मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आई टी बी पी) के उप महानिरीक्षक, श्री जसपाल सिंह तथा डिहार के निदेशक, डॉ आर बी श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक भी उपस्थित थे। 12,000 से भी अधिक स्थानीय किसानों, सैनिकों तथा स्कूली बच्चों के समूह को संबोधित करते हुए डॉ आर बी श्रीवास्तव ने क्षेत्र में खाद्य, स्वास्थ्य तथा ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में डिहार द्वारा किए गए प्रयासों तथा पहलों के बारे में जानकारी दी। श्री जसपाल सिंह ने डिहार द्वारा किए गए योगदान की सराहना की तथा अग्र-क्षेत्र अवस्थितियों में हरित गृहों (ग्रीन हाउसेज) को स्थापित करके डिहार तथा आई टी बी पी के बीच अधिक मजबूत पारस्परिक संपर्क स्थापित करने का



लेफ्टिनेंट जनरल राकेश शर्मा, उद्घाटन उद्बोधन देते हुए।

प्रस्ताव रखा। इस अवसर पर बोलते हुए लेफ्टिनेंट जनरल राकेश शर्मा ने सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण लद्दाख क्षेत्र में डिहार को डी आर डी ओ के एक चेहरे के रूप में चित्रित किया तथा इस बात पर बल दिया कि डिहार को एक उदाहरण के रूप में माना जाना चाहिए, जहां वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशाला में किए गए अनुसंधान कार्य का क्षेत्र में तैनात सैनिकों के जीवन पर अत्यधिक लाभकारी प्रभाव पड़ता है।

सम्मेलन / सेमिनार / विचार-गोष्ठी / प्रशिक्षण पाठ्यक्रम / बैठकें

दीर्घावधिक प्रौद्योगिकी के संबंध में भावी योजना हेतु बैठक

सशस्त्र सेनाओं के लिए दीर्घावधिक एकीकृत भावी योजना (एल टी आई पी पी) के अंतर्गत डी आर डी ओ हेतु दीर्घावधिक प्रौद्योगिकी के संबंध में भावी योजना (एल टी टी पी पी) तैयार करने के लिए आयुध अनुसंधान तथा विकास स्थापना (ए आर डी ई), पुणे में 31 जुलाई, 2013 को वाइस एडमिरल (सेवानिवृत्त) रमनपुरी की अध्यक्षता में आयुध तथा उच्च ऊर्जा पदार्थ से संबंधित उप समिति की दूसरी बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में डी आर डी ओ मुख्यालय तथा आयुध से संबद्ध प्रयोगशालाओं के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित आयुध अनुसंधान बोर्ड (ए आर एम आर ई बी) के अध्यक्ष डॉ एस के सालवान; डॉ डी एस कोठारी डी आर डी ओ पीठ के डॉ कोटा हरिनारायण; ए आर डी ई के निदेशक श्री ए एम दातार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक; अग्नि, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केंद्र (सीफीस), दिल्ली के निदेशक डॉ सुदर्शन कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक; आई डी एस टी के अध्यक्ष मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) देवेंद्र कपिल, ए वी एस एम; ए आर डी ई के भूतपूर्व निदेशक, श्री सुरेंद्र कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक; डी आर डी ओ मुख्यालय में आयुध निदेशक डॉ डी के खरात; चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टी बी आर एल), चंडीगढ़ के निदेशक, डॉ मंजीत सिंह, तथा प्रमाण एवं प्रायोगिकी स्थापना (पी एक्स ई), चांदीपुर के निदेशक, श्री आर अप्पाउराज ने भाग लिया।

अनुसंधान परिषद् की बैठक

आयुध प्रयोगशालाओं के लिए अत्याधुनिक अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम तैयार करने तथा विभिन्न स्टेकहोल्डरों के साथ नेटवर्किंग हेतु तरीकों और साधनों के संबंध में सुझाव प्राप्त करने एवं समर्थकारी प्रौद्योगिकियों, उत्पाद चक्र विकास एवं उत्पादन योजनाओं के संबंध में अनुसंधान एवं विकास क्रियालापों की समीक्षा करने के लिए आयुध अनुसंधान बोर्ड (ए आर एम आर ई बी) के अध्यक्ष, डॉ एस के सालवान की अध्यक्षता में 01 अगस्त 2013 को ए आर डी ई, पुणे की अनुसंधान परिषद् की पहली बैठक का आयोजन किया गया। शिक्षा जगत तथा डी आर डी ओ के जाने-माने व्यक्ति एवं आयुध श्रेणी की सभी

प्रयोगशालाओं के निदेशक इस परिषद् के सदस्य हैं। डॉ एस के सालवान ने आयुध प्रौद्योगिकी में भावी रुझानों के संबंध में एक प्रस्तुतीकरण दिया।

भविष्य हेतु पर्यवेक्षी कौशल से संबंधित सतत् शिक्षा कार्यक्रम

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली ने डी आर टी सी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए 29-31 जुलाई 2013 के दौरान "भविष्य हेतु पर्यवेक्षी कौशल" विषय पर एक तीन दिवसीय विशेष सतत् शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी) का आयोजन किया। इस दौरान डॉ राजीव विज, पाठ्यक्रम निदेशक ने प्रतिभागियों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों तथा प्रयोजन के संबंध में संक्षेप में बताया। कार्मिक प्रतिभा प्रबंधन केंद्र (सेपटेम), दिल्ली के निदेशक, डॉ राजेश गोयल समारोह के मुख्य अतिथि थे। इनमास के निदेशक, डॉ आर पी त्रिपाठी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने प्रतिभागियों को इस पारस्परिक संपर्क पाठ्यक्रम से प्राप्त जानकारी को अपने कार्यस्थल पर प्रयोग में लाने की सलाह दी। पाठ्यक्रम के दौरान जिन विषयों पर चर्चा की गई, उनमें संचार, सूचना प्रौद्योगिकी एवं पर्यवेक्षी कौशल को सुदृढ़ बनाने से संबंधित कार्यक्रम शामिल था। डॉ राजीव विज ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।



प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ त्रिपाठी।

परियोजना प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर कार्यशाला

प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई टी एम), मसूरी ने 2-3 अगस्त 2013 के दौरान तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र (टी टी सी), बंगलूरु में डी आर डी ओ के परियोजना प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं के संबंध में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला

का उद्घाटन वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु के निदेशक, डॉ एस क्रिस्टोफर, विशिष्ट वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य डी आर डी ओ के मध्य स्तर के वैज्ञानिकों में परियोजना प्रबंधन प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना था ताकि निर्धारित सीमा से अधिक लागत एवं समय के व्यय तथा प्रयोक्ता की असंतुष्टि से संबंधित पहलुओं को अच्छी तरह समझा जा सके। इस अवसर पर भारतीय विज्ञान संस्थान (आई आई एससी), बेंगलूरु के प्रोफेसर, परमेश्वर अय्यर; कृत्रिम ज्ञान तथा रोबोटिकी केंद्र, बेंगलूरु के निदेशक, श्री संजय बर्मन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक; तथा आई टी एम, मसूरी के निदेशक, डॉ एस बी सिंह जैसे जाने-माने व्यक्तियों ने इस विषय पर अपने अनुभवों को साझा किया। इस कार्यशाला में दक्षिण क्षेत्र में स्थित डी आर डी ओ की प्रयोगशालाओं से आए 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वायुगतिकी के आधारभूत तत्त्व (बेसिक्स ऑफ एरोडायनमिक्स) विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

वायुगतिकी के आधारभूत तत्त्व विषय पर अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद द्वारा 5-9 अगस्त 2013 के दौरान एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन आर सी आई के निदेशक, मुख्य अतिथि श्री जी सतीश रेड्डी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री रेड्डी ने आर सी आई में जारी परियोजना परिदृश्य के संदर्भ में कार्यक्रमों को आयोजित करने की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की।



बाएं से दाएं : उद्घाटन समारोह में डॉ एस बी सिंह, डॉ एस क्रिस्टोफर और श्री टी प्रकाश राव।

इस पाठ्यक्रम के दौरान चर्चा हेतु मिसाइल वायुगतिकी की भूमिका, पार्श्विक अभिलक्षण, वायुगतिकी अभिकल्प क्रियाविधि, फ्लाइंट डेटा विश्लेषण आदि जैसे विषयों को शामिल किया गया। संकाय सदस्यों के रूप में रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी

एल), हैदराबाद तथा आर सी आई, हैदराबाद से विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। इस पाठ्यक्रम में 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ पी तीर्थमलई, वैज्ञानिक 'जी', डी आर डी एल, हैदराबाद ने समापन समारोह के दौरान प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए। श्री एम शंकर किशोर, वैज्ञानिक 'जी' पाठ्यक्रम निदेशक थे।

युवा वैज्ञानिकों हेतु इन-हाउस सेमिनार

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु ने स्थापना के युवा वैज्ञानिकों में प्रौद्योगिकीय जागरूकता सृजित करने के लिए युवा वैज्ञानिकों हेतु एक इन-हाउस सेमिनार (आई एन एस वाई एस) आयोजित किया। इस प्रकार के सेमिनार युवा



उद्घाटन भाषण देते हुए श्री सतीश रेड्डी।

वैज्ञानिकों को अपने अनुसंधान कार्यों पर चर्चा करने का अवसर प्रदान करते हैं। प्रत्येक महीने के पहले शनिवार को विभिन्न विषयों पर तीन तकनीकी व्याख्यान आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें एक वरिष्ठ तथा एक कनिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा अपनी विशिष्टता के क्षेत्रों में व्याख्यान प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रतिष्ठित अतिथि वक्ताओं को भी अपना प्रमुख भाषण देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अग्नि परियोजना की परियोजना निदेशक श्रीमती टेस्सी थॉमस ने 3 अगस्त 2013 को सेमिनार के सातवें एडिशन में मिसाइल प्रौद्योगिकी विषय पर अपना प्रमुख भाषण दिया। अपने प्रस्तुतीकरण में आपने परियोजना लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकीय तथा कार्यक्रम प्रबंधन से संबंधित चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने के संबंध में बताया। श्रीमती थॉमस ने प्रतिभागियों को बताया कि अग्नि के पहले संस्करण से लेकर नवीनतम अग्नि-5 परियोजना तक पहुंचने के दौरान किस प्रकार प्रौद्योगिकियों को परिष्कृत किया गया ताकि अग्नि मिसाइल प्रणाली को एक अत्याधुनिक मिसाइल प्रणाली के रूप में विकसित किया जा सके।



मुख्य संबोधन देते हुए श्रीमती टेस्सी थॉमस।

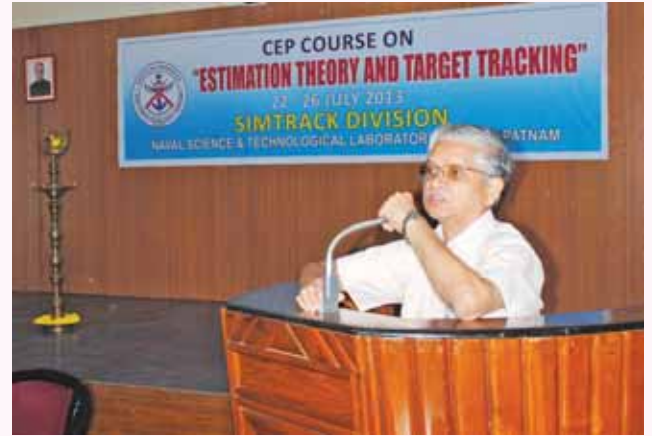
युवा वैज्ञानिकों हेतु इन-हाउस सेमिनार (आई एन एस वाई एस) शृंखला के अंतर्गत सुश्री विमला नारायणन, वैज्ञानिक 'जी' तथा सुश्री संगीता बक्स्ला, वैज्ञानिक 'सी' ने क्रमशः ऐरो गैस टरबाइन इंजन की स्टार्टिंग प्रणालियों तथा ऐरो इंजन संरचनात्मक विश्लेषण – वर्तमान स्थिति एवं भावी आयोजना विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया।

आकलन सिद्धांत तथा लक्ष्य अनुवर्तन विषय पर सतत शिक्षा कार्यक्रम (सी ई पी)

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकीय प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम द्वारा 22-26 जुलाई 2013 के दौरान आकलन सिद्धांत तथा लक्ष्य अनुवर्तन विषय पर सी ई पी पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन श्री सी डी मालेश्वर, वैज्ञानिक 'जी' तथा स्थानापन्न

निदेशक, एन एस टी एल द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य इस क्षेत्र में कार्य कर रहे वैज्ञानिकों को अनुकूली आकलन सिद्धांत के मूलभूत सिद्धांत, दर्शन और अनुप्रयोग से परिचित कराना था। इस विषय का अनेक अनुप्रयोगों जैसेकि जड़त्वीय नौसंचालन प्रणाली, सोनार और साथ ही रेडार लक्ष्य अनुवर्तन, अनुकूली व्यूह प्रक्रमण, सक्रिय शोर विलोपन आदि क्षेत्रों में सीधा संबंध देखा जाता है। इस पाठ्यक्रम में एन एस टी एल से आए 4 वैज्ञानिकों सहित कुल 18 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

पाठ्यक्रम हेतु संकाय सदस्यों को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, राष्ट्रीय वैमानिकी लिमिटेड और डी आर डी ओ की अन्य प्रयोगशालाओं से आमंत्रित किया गया था। श्री सुखेंदु शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ', पाठ्यक्रम निदेशक थे।



उद्घाटन भाषण देते हुए श्री सी डी मालेश्वर।

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस

प्रोफेसर एस आर रंगनाथन (9 अगस्त 1892-27 सितंबर 1972) भारत के एक प्रसिद्ध गणितज्ञ तथा पुस्तकालय कर्मी थे। उनके द्वारा पुस्तकालय विज्ञान के संबंध में प्रस्तुत किए गए पांच नियमों (1931) तथा पहली प्रमुख विश्लेषण-संश्लेषण वर्गीकरण प्रणाली विकसित करने को इस क्षेत्र में उनका सर्वाधिक उल्लेखनीय योगदान माना जाता है। आपको भारत में पुस्तकालय विज्ञान, प्रलेखन तथा सूचना-विज्ञान का जनक माना जाता है तथा आप विश्व के शेष सभी भागों में इस क्षेत्र में मौलिक चिंतन हेतु जाने जाते हैं। भारत सरकार ने आपके द्वारा इस क्षेत्र में किए गए योगदान के लिए आपको 'राष्ट्रीय अनुसंधान प्राध्यापक' की दुर्लभ उपाधि से सम्मानित किया और बाद में आपको पद्मश्री की उपाधि भी प्रदान की। आपका जन्म दिन प्रति वर्ष राष्ट्रीय

पुस्तकालय दिवस के रूप में मनाया जाता है। डी आर डी ओ के निम्नलिखित तकनीकी सूचना संसाधन केंद्रों (टी आई आर सी) ने भी राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस का आयोजन करके इस महान स्वप्नद्रष्टा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि दी।

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल), हैदराबाद

उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला, हैदराबाद द्वारा 12 अगस्त 2013 को पुस्तकालय कर्मी दिवस तथा डी आर डी ओ पुस्तकालय-2020 विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में हैदराबाद स्थित डी आर डी ओ के विभिन्न पुस्तकालयों से लगभग 30 पुस्तकालय कर्मियों ने भाग लिया।



उद्घाटन भाषण देते हुए श्री के जयरमन।

इस समारोह में श्री के जयरमन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, ए एस एल मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्री पी वी जी ब्रह्मानंदम, वैज्ञानिक 'जी' तथा ए एस एल की पुस्तकालय सलाहकार समिति के अध्यक्ष ने विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में भाग लिया। श्री के जयरमन ने दीप प्रज्वलित करके तथा डॉ रंगनाथन को पुष्पांजलि अर्पित करके कार्यक्रम का उद्घाटन किया। आपने पढ़ने के महत्त्व पर बल देते हुए कहा कि "पढ़ें और अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन करें"। आई ए एस एल आई सी के उपाध्यक्ष, श्री टी अशोक बाबू ने स्वागत भाषण दिया। श्री एम. प्रहलाद राव, वैज्ञानिक 'एफ', रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद ने समारोह में उपस्थित पुस्तकालय कर्मियों को डॉ एस आर रंगनाथन के जीवन तथा उनकी उपलब्धियों के संबंध में जानकारी दी।

श्री एम प्रहलाद राव ने सेमिनार के थीम पर अपना वक्तव्य दिया। श्री हेमंत कुमार, प्रमुख, टी आई सी, ए एस

एल; डॉ के नागेश्वर राव, प्रमुख, के सी, रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला (डी आर डी एल); श्री एन वेंकटेश, प्रमुख, टी आई आर सी, अनुसंधान केंद्र इमारत (आर सी आई), हैदराबाद; श्री बी एन रंगास्वामी, प्रमुख, टी आई सी और श्री जे आर सी शर्मा – दोनों रक्षा इलैक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल) से; तथा डी आर डी एल के श्री राजीव शर्मा, श्री एम आर साहू, श्री श्रीनिवास राव ने भी वर्ष 2020 में डी आर डी ओ के पुस्तकालयों के स्वरूप के संबंध में अपने विचार प्रकट किए। समारोह में उपस्थित जनों द्वारा प्रश्न पूछकर तथा विशेषज्ञ उत्तरों द्वारा सक्रिय प्रतिभागिता की गई। श्री वार्ड के डी प्रसाद ने मुख्य संवक्ता की भूमिका निभाई। श्री मनोज कुमार साहू, तकनीकी अधिकारी 'ए', उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (ए एस एल) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली

प्रोफेसर एस आर रंगनाथन के 121वें जन्म वर्षगांठ के अवसर पर नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान, दिल्ली ने 8 अगस्त 2013 को राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस (एन एल डी) समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत टी आई आर सी, इनमास के संग्रहण, सेवाओं और उपलब्धियों के संबंध में डॉ राजीव विज, वैज्ञानिक 'एफ' द्वारा प्रस्तुत की गई एक वार्ता के साथ हुई। डॉ बी एस द्वारकानाथ, स्थानापन्न निदेशक, इनमास ने अपने भाषण में वैज्ञानिक समुदाय को केवल इंटरनेट पर ही निर्भर न रहने की सलाह दी जिसमें अविश्वसनीय स्रोतों से बहुत सारी सूचनाओं की भरमार होती है। आपने प्रयोगशाला कर्मियों को डिजिटल पर्यावरण में प्रयोक्ता-उन्मुख सेवाएं प्रदान करने की भी सलाह दी।



राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस (एन एल डी) समारोह के उद्घाटन का दृश्य।

इस अवसर पर डॉ ए के मैनी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, लेजर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केंद्र (लेसटेक), दिल्ली द्वारा दूसरा रंगनाथन स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। अपने व्याख्यान में आपने पुस्तकालय कर्मियों को अपने विषय क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने तथा 2050 में भावी चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार रखने के लिए प्रेरित किया। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं के संवर्धन की आवश्यकता तथा युवा पीढ़ी को पुस्तकालय के महत्त्व के संबंध में प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए

डॉ मैनी ने सुझाव दिया कि पुस्तकालय कर्मियों के लिए नियमित रूप से कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित किया जाना चाहिए। श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली ने भी डेसीडॉक द्वारा डिजिटल पुस्तकालय पहल के संबंध में एक वार्ता प्रस्तुत की। आपने पुस्तकालय सूचना सेवा (एल आई एस) कर्मियों को भविष्य के लिए तैयार रहने की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यक्रम को ऐलाइड पब्लिशर सब्सक्रिप्शन एजेंसी द्वारा सह-प्रायोजित किया गया था।

एन एस टी एल द्वारा 44वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन



समारोह में उपस्थित विशिष्ट जनों को संबोधित करते हुए प्रोफेसर कोनेरु रामकृष्ण राव।

नौसेना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एन एस टी एल), विशाखापत्तनम ने अत्यधिक उत्साह एवं उमंग के साथ 20 अगस्त, 2013 को अपना 44वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया।

जी आई टी ए एम विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम के कुलपति प्रोफेसर कोनेरु रामकृष्ण राव इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। आपने एन एस टी एल द्वारा किए गए समर्पित प्रयासों तथा योगदानों की सराहना की। एन एस टी एल के निदेशक श्री एस वी रंगराजन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों क्षेत्रों में प्रयोगशाला के क्रियाकलापों के संबंध में

एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रतिभावान कर्मचारियों को प्रयोगशाला स्तरीय विभिन्न डी आर डी ओ पुरस्कार तथा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर विभिन्न सांस्कृतिक तथा खेलकूद प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं जिसमें काफी अधिक संख्या में कर्मचारियों ने अत्यधिक उत्साह के साथ भाग लिया। एन एस टी एल में कार्य कर रहे कर्मचारियों के बच्चों और विशेषकर 6-10 वर्ष और 11-14 वर्ष आयु समूह के स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न श्रेणियों में प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। रक्षा सुरक्षा कोर (डी एस सी) कार्मिकों के लिए चुनिंदा खेल कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ ए एस राजा की सहायता से एक रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया। इस शिविर में 100 से भी अधिक व्यक्तियों ने रक्तदान किया।



रक्तदान शिविर का दृश्य।

वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स), बेंगलूरु

12 अगस्त 2013 : डॉ जी मालकोंडैय्या, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक अनुसंधान एवं विकास (एच आर एंड एम) एवं डॉ ए के सिंह, निदेशक, डी ओ पी, डी आर डी ओ मुख्यालय। यहां आपको वायुवाहित पूर्व चेतावनी तथा नियंत्रण (ए ई डब्ल्यू एंड सी) कार्यक्रम में प्रगति के संबंध में संक्षेप में बताया गया। यहां आपने प्रयोगशाला के युवा वैज्ञानिकों के साथ भी चर्चा की।



कैब्स में ए ई डब्ल्यू एंड सी प्रणाली का प्रदर्शन।

12 अगस्त, 2013 : श्री अजय सिंह, मुख्य कार्यपालक (सी डब्ल्यू एंड ई) ने ब्रिगेडियर जे के राव, मुख्य अभियंता (अनुसंधान एवं विकास), सिकंदराबाद, श्री एम वी एस सुब्रह्मण्यम, अपर सी सी ई तथा श्री एम जी थिमैय्या, परियोजना प्रबंधक। इस टीम ने कैब्स के परिसर में स्थित विभिन्न सुविधाओं का निरीक्षण किया। कैब्स के निदेशक डॉ एस क्रिस्टोफर, विशिष्ट वैज्ञानिक ने टीम को कैब्स द्वारा लागू किए जा रहे कार्यक्रमों तथा विभिन्न सिविल कार्य से संबंधित पहलुओं में भावी योजनाओं के बारे में अवगत कराया। मुख्य कार्यपालक (सी ई) ने कैब्स की उपलब्धियों पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की तथा भविष्य में निरंतर तथा समय से सहायता उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया।

21 अगस्त 2013 : रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव तथा



ए ई डब्ल्यू एंड सी वायुयान में सवार श्री अविनाश चंद्र (बाएं)।

डी आर डी ओ के महानिदेशक श्री अविनाश चंद्र। इस दौरे में श्री रवि कुमार गुप्ता, निदेशक, डी पी आई आपके साथ थे। डॉ एस क्रिस्टोफर, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, कैब्स ने कैब्स में चलाए जा रहे ए ई डब्ल्यू एंड सी कार्यक्रम तथा उड़ान परीक्षण कार्यक्रम की प्रगति के बारे में रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार को संक्षेप में अवगत कराया। आपने कैब्स में स्थापित विभिन्न सुविधाओं का भी निरीक्षण किया। रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार ने डॉ एस क्रिस्टोफर, तथा श्री एस पी दास, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद के साथ ए ई डब्ल्यू एंड सी वायुयान में एक उड़ान भी भरी।

रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डिहार), लेह

07 अगस्त 2013 : राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड (एन एस ए बी) के अध्यक्ष, श्री श्याम सरण ने एन एस ए बी के सदस्यों लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) पी सी भारद्वाज तथा लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) प्रभाष मेनन। डॉ आर बी श्रीवास्तव, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डिहार ने सदस्यों को लद्दाख सेक्टर में तैनात सैनिकों को खाद्य, स्वास्थ्य एवं ऊर्जा सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए डिहार द्वारा किए गए योगदान से अवगत



श्री श्याम सरण (दाएँ) का स्वागत करते हुए डॉ आर बी श्रीवास्तव।

कराया। लेफ्टिनेंट जनरल भारद्वाज ने संस्थान द्वारा विगत वर्षों के दौरान अनुसंधान क्रियाकलापों के क्षेत्र में प्राप्त की गई प्रगति की सराहना की। श्री श्याम सरण ने डिहार को इसके उत्कृष्ट योगदान हेतु बधाई दी तथा इस प्रयोगशाला को ऐसे वैज्ञानिक परिणामों को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करने वाले एक उत्कृष्ट प्रयोगशाला का दर्जा दिया जो सैनिकों तथा समाज दोनों के लिए उपयोगी तथा साथ ही वाणिज्यिक दृष्टि से भी व्यवहार्य हैं।

गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जी टी आर ई), बेंगलूरु

22 जुलाई 2013 : माननीय रक्षा राज्य मंत्री (आर आर एम), श्री जितेंद्र सिंह। माननीय मंत्री महोदय



रक्षा राज्य मंत्री को चेक भेंट करते हुए डॉ सी पी रामनारायणन तथा डॉ तमिलमणि।

के साथ डॉ के तमिलमणि, विशिष्ट वैज्ञानिक तथा मुख्य नियंत्रक, अनुसंधान एवं विकास (ऐरो) भी इस दौरे पर आए थे। डॉ सी पी रामनारायणन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा निदेशक, जी टी आर ई ने माननीय रक्षा राज्य मंत्री को प्रयोगशाला की चालू परियोजनाओं तथा अन्य विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में संक्षेप में अवगत कराया। माननीय रक्षा राज्य मंत्री ने इंजन असेम्बली हैंगर का दौरा किया जहां इंजन तथा इसके महत्वपूर्ण संघटकों की प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। आपने जी टी आर ई इंजन परीक्षण संस्तर में इंजन परीक्षण को भी देखा।

इस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय को प्रधान मंत्री राष्ट्रीय राहत कोष के लिए 6,88,961 रुपए का एक चेक भेंट किया गया। यह जी टी आर ई के कर्मचारियों द्वारा बाढ़ प्रभावित उत्तराखंड में राहत कार्य के लिए स्वेच्छा से दिए गए अंशदान की राशि थी।

उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एच ई एम आर एल), पुणे

04 जुलाई 2013 : रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग के सचिव, तथा डी आर डी ओ के महानिदेशक, श्री अविनाश चंद्र।

रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (डी एल आर एल), हैदराबाद

16 जुलाई 2013 : सैन्य प्रशिक्षण संस्थान, पुणे के निदेशक एयर वाइस मार्शल पी पी खांडेलकर। इस दौरान डी एल आर एल के निदेशक, श्री एस पी दास, विशिष्ट वैज्ञानिक ने उन्हें प्रयोगशाला के विभिन्न तकनीकी क्रियाकलापों के बारे में संक्षेप में बताया। बाद में उन्हें डी एल आर एल द्वारा अभिकल्पित तथा विकसित कुछ उत्पादों को भी दिखाया गया।

मुख्य सम्पादक
सुरेश कुमार जिंदल

सम्पादक
फूलदीप कुमार

सम्पादकीय सहायक
अशोक कुमार

मुद्रण
एस के गुप्ता
हंस कुमार

विपणन
आर पी सिंह

श्री सुरेश कुमार जिंदल, निदेशक, डेसीडॉक द्वारा डी आर डी ओ की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित

प्रकाशक : डेसीडॉक, मेटकॉफ हाउस, दिल्ली-110054 ; दूरभाष : 011-23812252 ; फ़ैक्स : 011-23819151 ; ई-मेल : director@desidoc.drdo.in